Name: _____ Date: _____

क्या निराश हुआ जाए

प्रश्न-1 आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए।

उत्तर _____

प्रश्न-2 'मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं।' ये पंक्ति किसने कही और क्यों? पंक्ति की सार्थकता सिद्ध करते हुए पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर _____

https://educationwithfun.com

क्या निराश हुआ जाए

प्रश्न-1 आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए।

उत्तर टीवी चैनल व समाचार पत्रों द्वारा जो 'दोषों का पर्दाफ़ाश' किया जा रहा है वो पहले किसी सीमा तक सही हुआ करता था। परन्तु, आज टीवी चैनलों और समाचार पत्रों की भरमार के कारण उनके बीच में जनमें श्रेष्ठ-दिखाने-की-होड़ ने इसे धंधा बना दिया है। इससे लोग दोनों पक्षों की सच्चाई जाने बिना ही अपनी तरफ़ से दोषारोपण आरम्भ कर देते हैं। इस बात को तनिक भी नहीं सोचते कि इससे किसी के जीवन पर बुरा असर पड़ सकता है। समाचार पत्र और चैनल सिर्फ अपनी T.R.P. का ही ध्यान रखते हैं। सच तो जैसे कुछ होता ही नहीं है।

प्रश्न-2 'मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं।' ये पंक्ति किसने कही और क्यों? पंक्ति की सार्थकता सिद्ध करते हुए पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं।' यह पंक्ति ' क्या निराश हुआ जाए 'पाठ के लेखक 'श्री हजारी प्रसाद दिववेदी जी' ने कही है। उनका मानना है कि जीवन में चाहे हमें निरंतर दोखा मिले अथवा हमारे समाज में चरों ओर दोषों और आरोपों का अंबार लगा क्यों न हो परन्तु हमारे जीवन में घटित होने वाली कुछ अच्छी घटनाएँ हमें यह मानने पर मजबूर करती हैं कि अभी निराश होने की ज़रूरत नहीं। इस पंक्ति को लेखक ने अपने जीवन में घटी दो घटनाओं का उदाहरण देकर सत्य साबित किया है। पहला टिकट बाबू द्वारा बचे हुए पैसे लेखक को लौटाना और दूसरा बस कंडक्टर द्वारा दूसरी बस व बच्चों के लिए दूध लाना।

https://educationwithfun.com